Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

ई-पाठशाला कार्यक्रम

Class 11th

GEOGRAPHY

संरचना तथा

भू-आकृति विज्ञान

RAPID REVISION



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

भारत

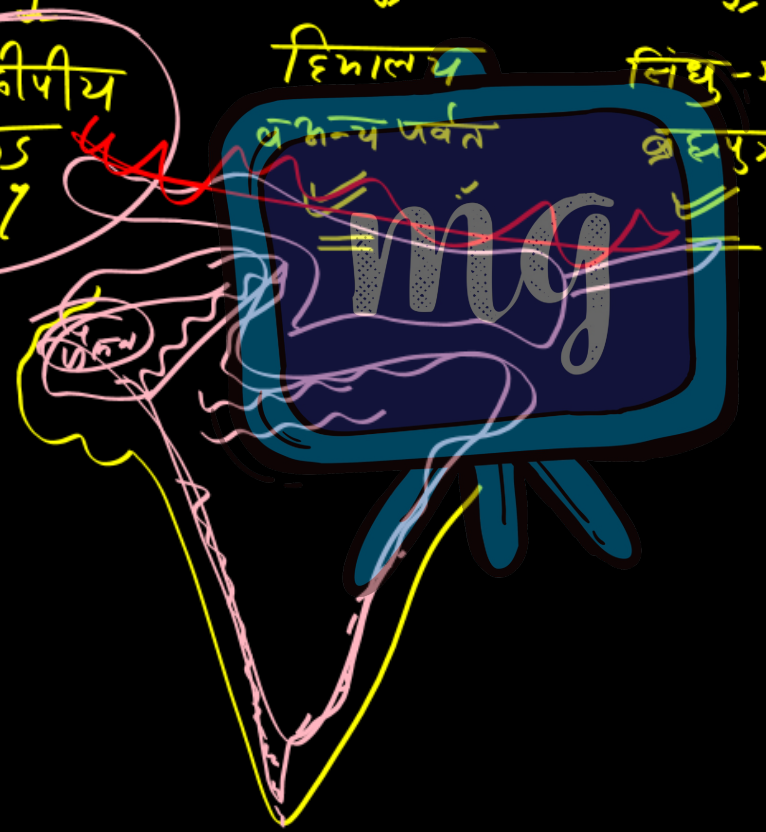
भू-गर्भिक संरचना

- प्रायद्वीपीय खण्ड
- हिमालय एवं अन्य पर्वत
- सिंधु-गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान

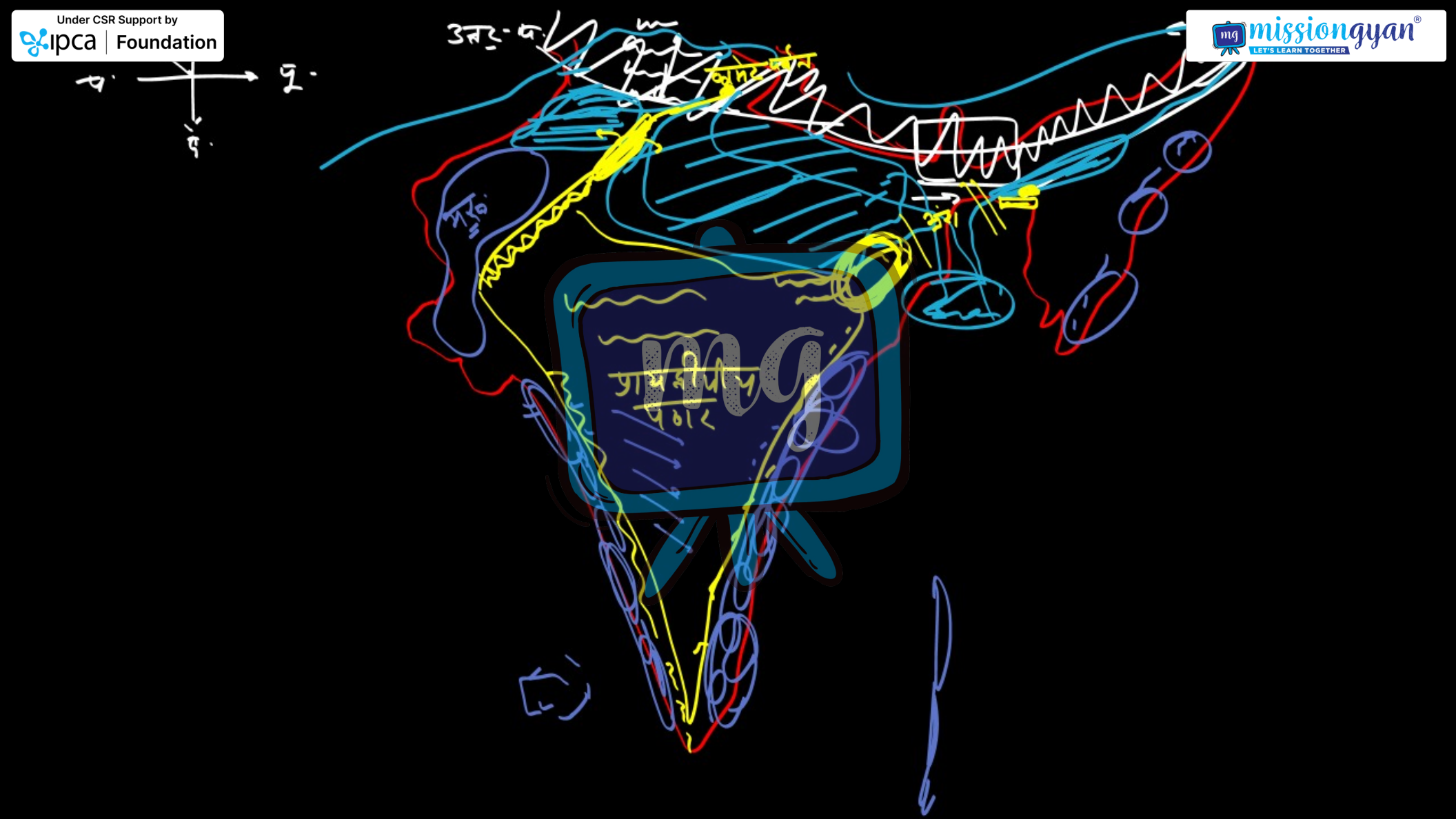
संरचना

भू-आकृति

- हिमालय
- उत्तरी मैदान
- प्रायद्वीपीय
- भारतीय मरुस्थल
- तटीय मैदान
- द्वीप



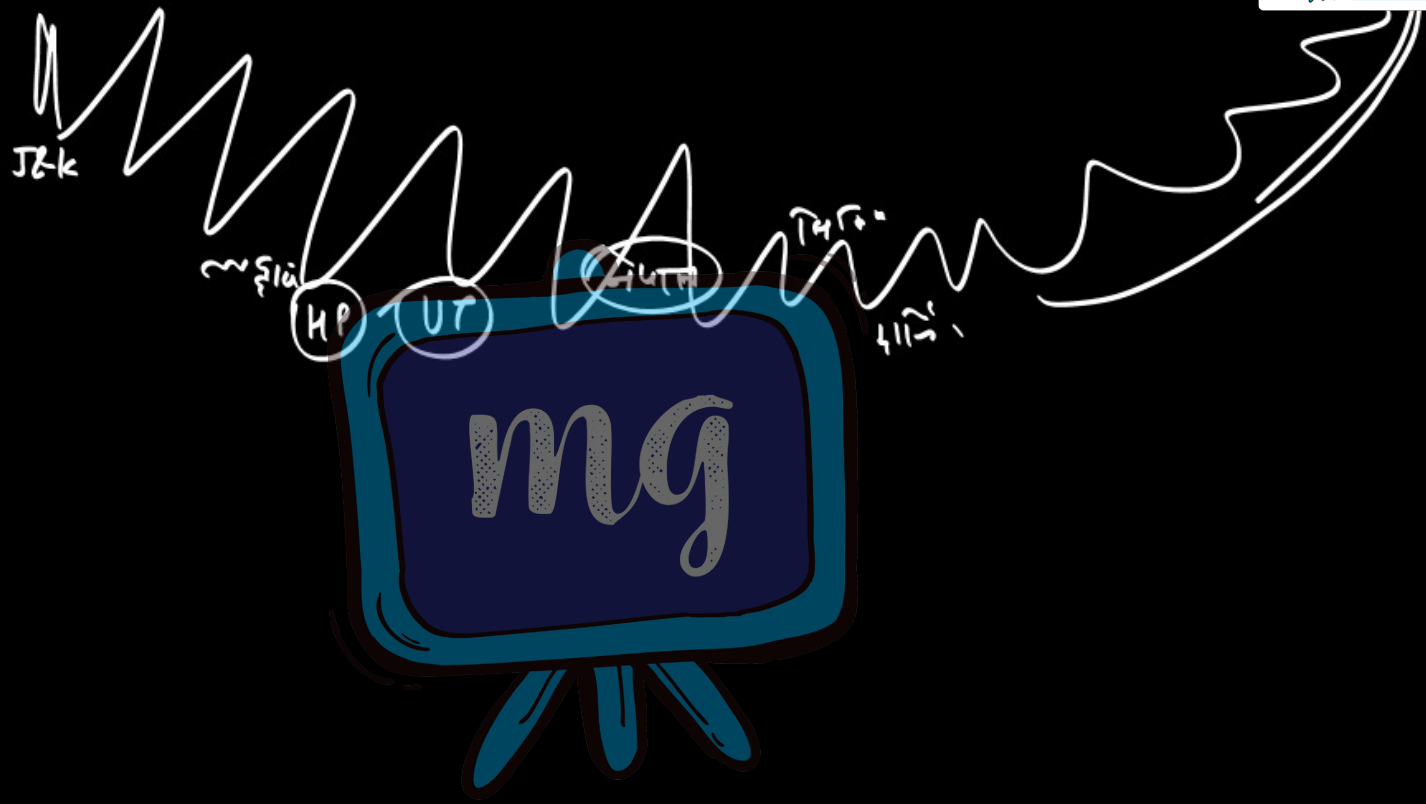
Under CSR Support by
ipca | Foundation



missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

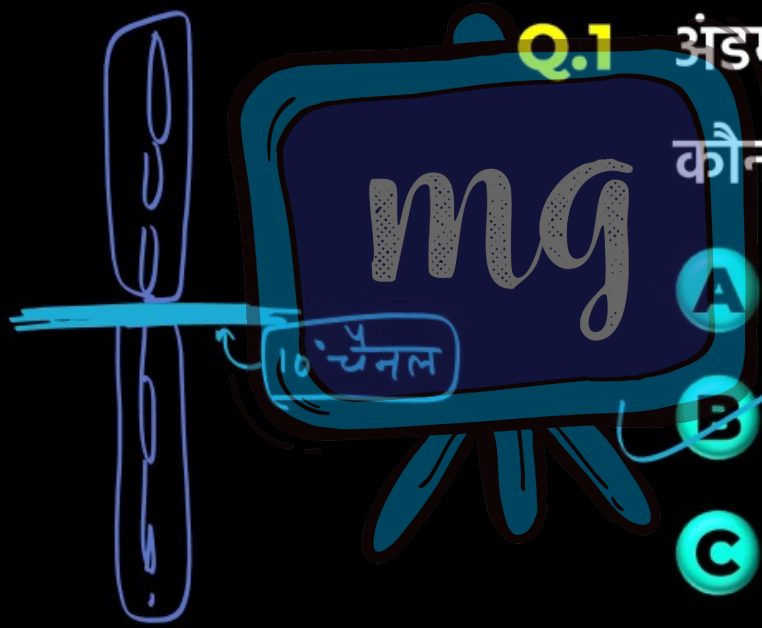


Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-



Q.1 अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह को कौन-सा जल क्षेत्र अलग करता है?

A. 11° चैनल

B. 10° चैनल

C. मन्नार की खाड़ी

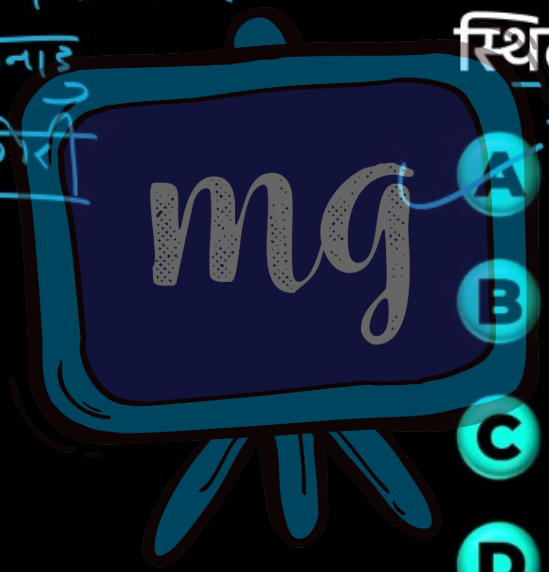
D. अंडमान सागर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

प्रायद्वीपीय पठार
तमिलनाडु
नीलगिरी

Q.2 डोडाबेट्टा चोटी किस पर्वत श्रेणी में स्थित है?



A नीलगिरि

B कार्डमम

C अनामलाई → (ऊरल)

D नल्लामाला

अनाईमुडी
↳ (2695 मी०)
प्रायद्वीप की सर्वोच्च चोटी

Under CSR Support by ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 भारतीय भूभाग के प्रायद्वीपीय खंड की प्रमुख चट्टानें कौन-सी हैं?

प्राचीन स्थिर भूखण्ड रूपान्तरित चट्टानें



(A) प्राचीन नाइस और ग्रेनाइट

(B) केवल जलोढ़ चट्टानें

(C) केवल रेतीली चट्टानें

(D) केवल नवीन अवसादी चट्टानें

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 निम्नलिखित में से कौन-सी नदी डेल्टा का निर्माण करती है?



A नर्मदा
B ताप्ती
→ एश्चुरी निर्माण

C महानदी

D बनास → चम्बल में विलेय
यमुना " "
गंगा →

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊँची चोटी कौन-सी है?

महेन्द्रगिरी पर्वत चोटी → 1501 मी.
(पूर्वी घाट श्रेणी)

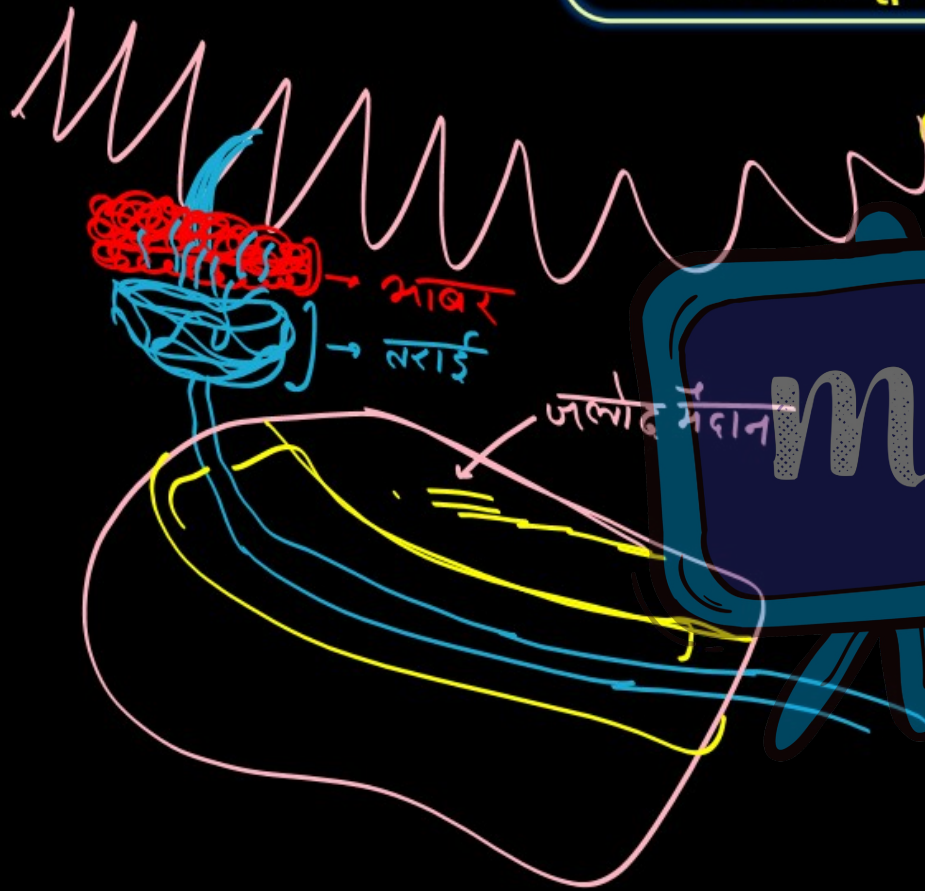


A. डोडाबेट्टा
B. अनाईमुडी → 2695 (अनामलाई पहाड़ियाँ)
C. सैंडल चोटी → अण्डमान निकोबार की सर्वोच्च → 732 मी.
D. माउंट थुलियर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Q.6 पश्चिमी तटीय मैदान की विशिष्ट स्थलाकृति कौन-सी है?

A. भाबर
B. तराई
C. कायाल
D. भांगर



Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

रिक्तस्थान-

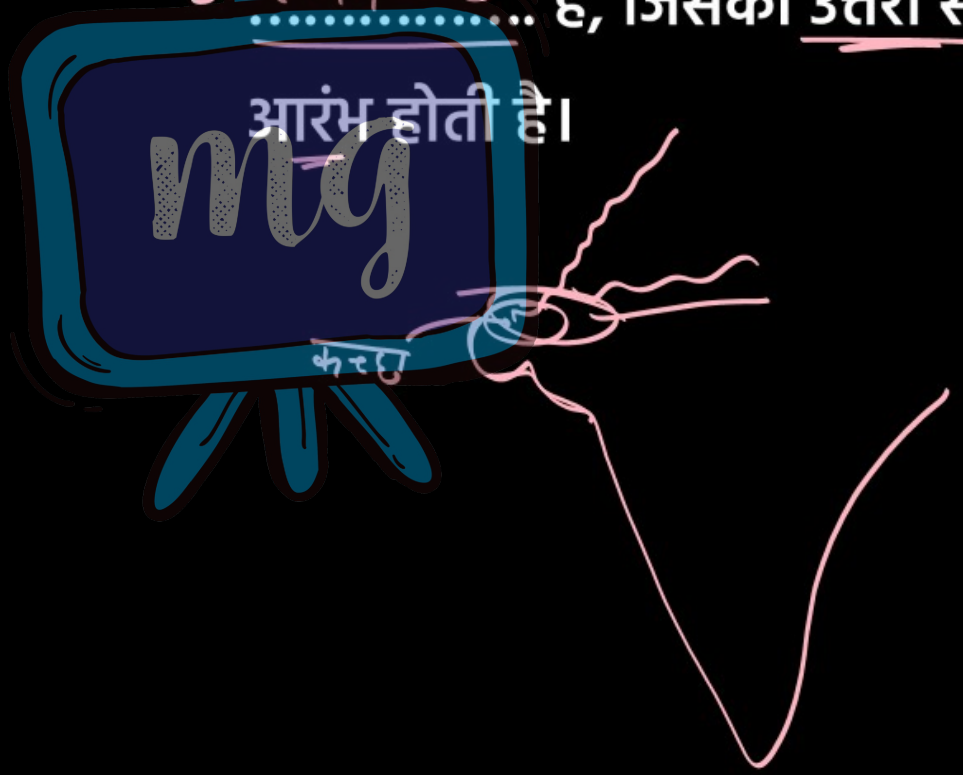
Q.1 पृथ्वी की आयु का वर्तमान अनुमान लगभग 460 करोड़ वर्ष है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 भारत के तीन भूवैज्ञानिक खंडों में से एक प्रायद्वीपीय खण्ड ..... है, जिसकी उत्तरी सीमा कच्छ से आरंभ होती है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 सिंधु–गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान का निर्माण मुख्यतः हिमालय पर्वत निर्माण प्रक्रिया के तीसरे चरण में लगभग ..... हुआ था।

6.4 करोड़ वर्ष

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

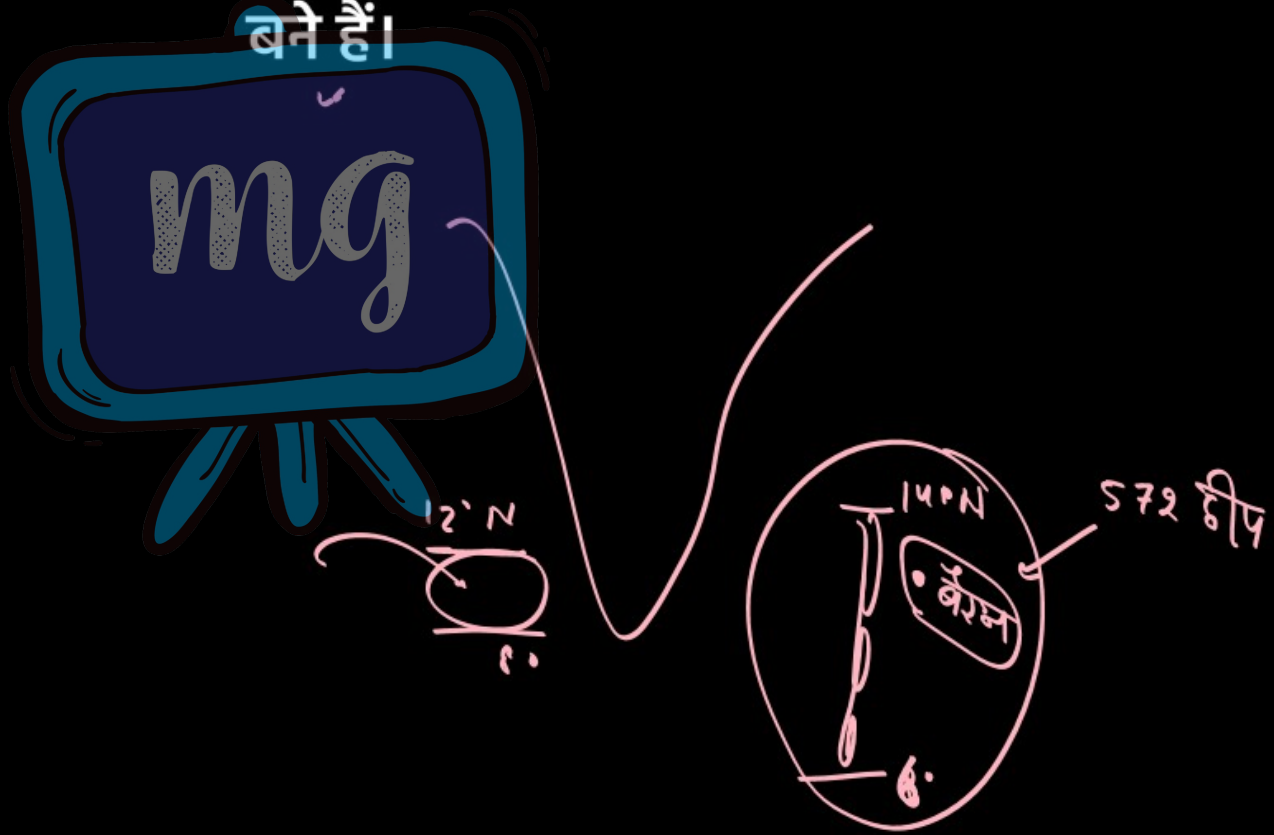
Q.4 भारत के विशाल मरुस्थल में वार्षिक वर्षा 150 मिमी या 15 सेमी से कम होती है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

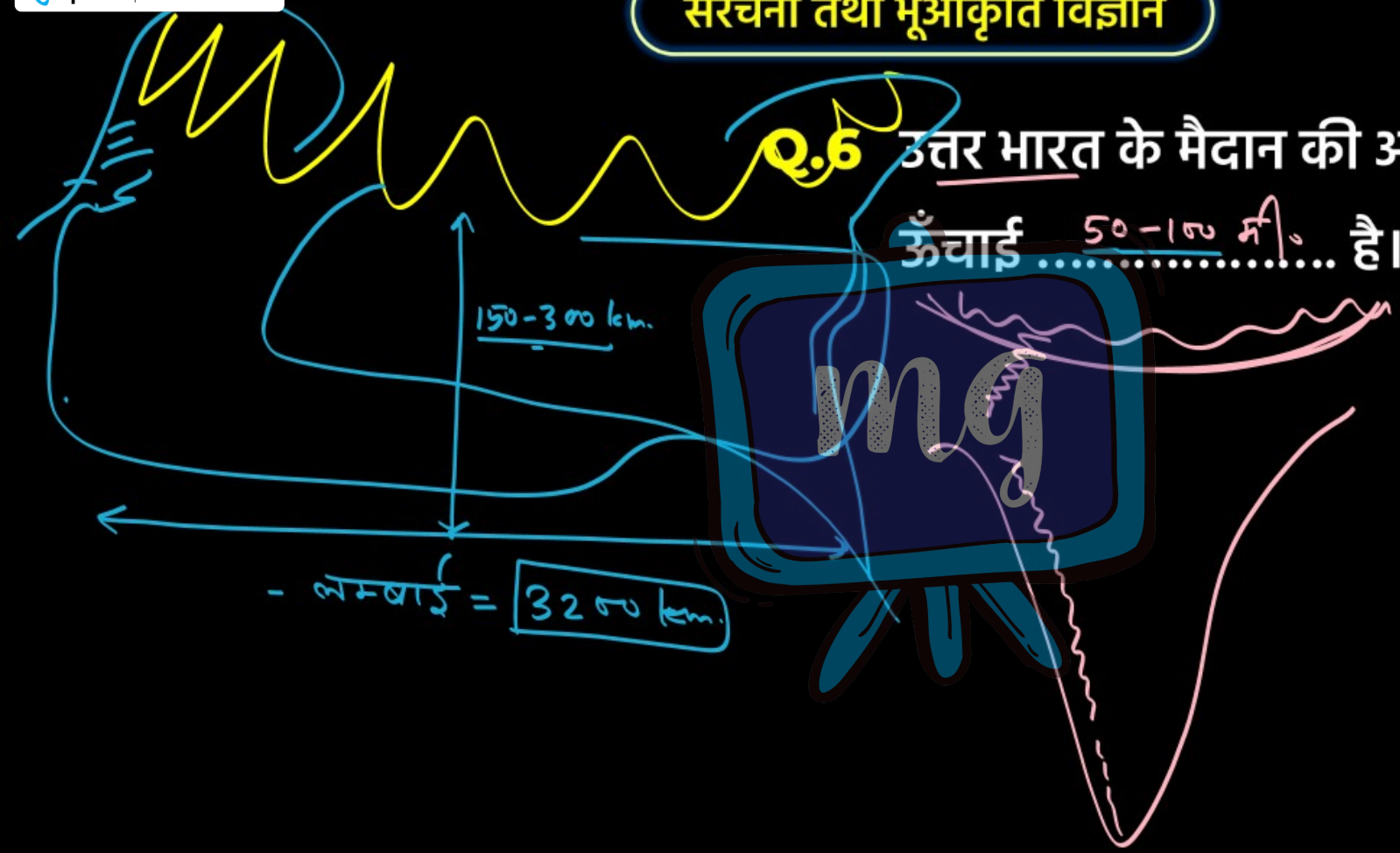
Q.5 लक्षद्वीप समूह के द्वीप ..प्रवाल..... निक्षेप से बने हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.6 उत्तर भारत के मैदान की औसत समुद्र तल से ऊँचाई 50-100 मी. ..... है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.7 मेघालय के पठार पर स्थित चेरापूंजी .....नग्न..... चट्टानों से ढका स्थल है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न-

Q.1 भूआकृति विज्ञान से क्या तात्पर्य है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.1 भूआकृति विज्ञान से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :

- भूआकृति विज्ञान में किसी स्थान की भू-आकृति, उसकी संरचना, उसे बनाने वाली प्रक्रियाओं तथा उसके विकास की अवस्था का अध्ययन किया जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 भारतीय उपमहाद्वीप की वर्तमान भूवैज्ञानिक संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-से हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 भारतीय उपमहाद्वीप की वर्तमान भूवैज्ञानिक संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-से हैं?

8848 मी.
8848.86 मी.

उत्तर:

- भारतीय उपमहाद्वीप की भूवैज्ञानिक संरचना और भूआकृतिक प्रक्रियाएँ अंतर्जनित तथा बहिर्जनित बलों और प्लेटों के क्षैतिज संचरण से प्रभावित होती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 हिमालय की भूवैज्ञानिक संरचना कैसी है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 हिमालय की भूवैज्ञानिक संरचना कैसी है?

उत्तर :

- हिमालय की भूवैज्ञानिक संरचना तरुण (नवीन), दुर्बल और लचीली है।
- यहाँ वलन, भ्रंश तथा क्षेप जैसी संरचनात्मक विशेषताएँ पाई जाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 भाबर क्षेत्र की प्रमुख विशेषता क्या है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 भाबर क्षेत्र की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर :



भाबर शिवालिक गिरिपाद के समानांतर फैली संकरी पट्टी है, जहाँ पर्वतीय नदियाँ बड़े शैलखंड और गोलाश्म जमा करती हैं तथा कभी-कभी लुप्त हो जाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 तराई क्षेत्र की प्रकृति का वर्णन कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 तराई क्षेत्र की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 10-20 km.

तराई भाबर के दक्षिण में स्थित नम क्षेत्र है। यहाँ नदियाँ धरातल पर प्रकट होती हैं और प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणियों की विविधता मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.6 ब्रह्मपुत्र घाटी का मैदान किस विशेषता के लिए जाना जाता है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.6 ब्रह्मपुत्र घाटी का मैदान किस विशेषता के लिए जाना जाता है?

उत्तर :

- ब्रह्मपुत्र घाटी का मैदान नदी द्वीपों और बालू-रोधिका के लिए प्रसिद्ध है।
- यहाँ बाढ़ के दौरान नदियाँ मार्ग बदलकर गुंफित वाहिकाएँ बनाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.7 भारतीय मरुस्थल में जल की कमी के प्रमुख कारण क्या हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.7 भारतीय मरुस्थल में जल की कमी के प्रमुख कारण क्या हैं?

उत्तर :

- भारतीय मरुस्थल में अल्प वर्षा और अत्यधिक वाष्पीकरण के कारण जल की कमी बनी रहती है।
- इसकी अनेक नदियाँ थोड़ी दूरी के बाद लुप्त हो जाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.8 मेघालय के पठार की खनिज संपदा का उल्लेख कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.8 मेघालय के पठार की खनिज संपदा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

मेघालय का पठार कोयला, लोहा, सिलिमेनाइट, चूना पत्थर और यूरेनियम जैसे खनिज पदार्थों का भंडार है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

Q.1 भारत के भूवैज्ञानिक खंडों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.1 भारत के भूवैज्ञानिक खंडों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर :

- भूवैज्ञानिक संरचना और शैल समूहों की भिन्नता के आधार पर भारत को तीन प्रमुख भूवैज्ञानिक खंडों में बाँटा गया है।
- इनमें प्रायद्वीपीय खंड, हिमालय तथा अन्य अतिरिक्त प्रायद्वीपीय पर्वतमालाएँ और सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान शामिल हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- इन खंडों की संरचना में अंतर होने के कारण धरातल और भूआकृतियों में भी विविधता मिलती है।
- भारतीय उपमहाद्वीप की वर्तमान स्थलाकृति के निर्माण में भूवैज्ञानिक संरचना और सक्रिय भूआकृतिक प्रक्रियाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

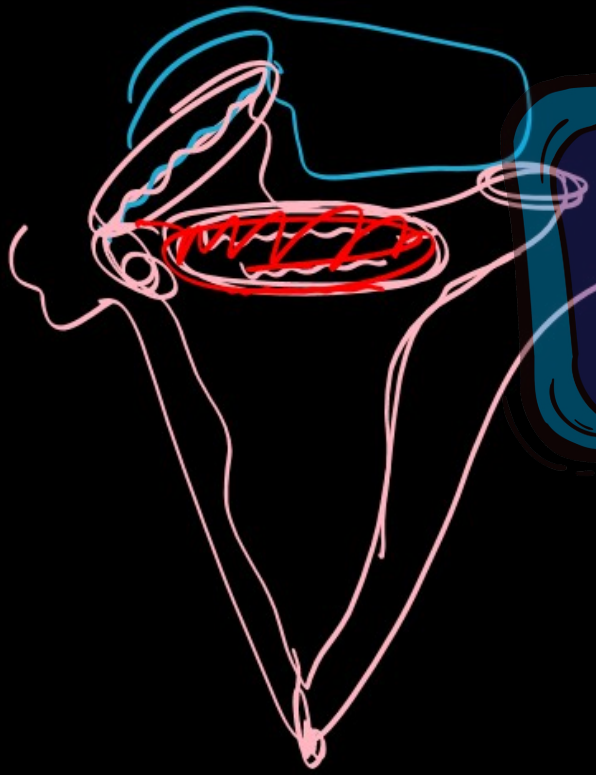
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 प्रायद्वीपीय पठार की सामान्य संरचना तथा सीमाओं का वर्णन कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Q.2 प्रायद्वीपीय पठार की सामान्य संरचना तथा सीमाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- प्रायद्वीपीय पठार नदियों के मैदान से ऊँचा उठा हुआ त्रिकोणाकार तथा कटा-फटा भूखंड है।
- इसकी सीमाएँ उत्तर-पश्चिम में दिल्ली और अरावली विस्तार, पूर्व में राजमहल पहाड़ियों, पश्चिम में गिर पहाड़ियों तथा दक्षिण में इलायची पहाड़ियों से निर्धारित होती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- उत्तर-पूर्व में शिलांग और कार्बी एंगलोंग पठार भी इसके विस्तृत भूभाग से संबंधित हैं।
- भारत के इस प्राचीन भूभाग में अनेक पठार सम्मिलित हैं, जिनकी ऊँचाई और स्थलाकृति में क्षेत्रीय अंतर मिलता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 मध्य उच्च भूभाग की प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ बताइए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 मध्य उच्च भूभाग की प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :

- मध्य उच्च भूभाग की पश्चिमी सीमा अरावली पर्वत बनाते हैं।
- दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत इसकी उत्तरी सीमा से संबंधित हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- इस क्षेत्र में अवशिष्ट पर्वतों के उदाहरण मिलते हैं, जिनकी श्रेणियाँ काफी हद तक अपरदित और खंडित हैं।
- इसका विस्तार जैसलमेर तक पहुँचता है, जहाँ रेत के टिब्बे और चापाकार बरखान पाए जाते हैं।
- इस भूभाग का पूर्वी विस्तार राजमहल पहाड़ियों तक है तथा इसके दक्षिण में स्थित छोटा नागपुर पठार खनिज पदार्थों के भंडार के लिए जाना जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 पूर्वी तथा पश्चिमी तटीय मैदानों में अंतर स्पष्ट कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 पूर्वी तथा पश्चिमी तटीय मैदानों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :

पश्चिमी तटीय मैदान जलमग्न तट का उदाहरण है और इसकी प्राकृतिक परिस्थितियाँ बंदरगाहों के विकास के अनुकूल हैं। इसके विपरीत पूर्वी तटीय मैदान चौड़ा तथा उभरे हुए तट का उदाहरण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले विस्तृत डेल्टा बनाती हैं। पूर्वी तट पर महाद्वीपीय शेल्फ की अधिक चौड़ाई के कारण बंदरगाहों और पोताश्रयों का विकास कठिन होता है।
- दोनों तटीय मैदानों की स्थलाकृति उनकी स्थिति तथा सक्रिय भूआकृतिक प्रक्रियाओं से प्रभावित है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 उत्तर-पूर्वी पठार का प्रायद्वीपीय पठार से अलगाव कैसे हुआ?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 उत्तर-पूर्वी पठार का प्रायद्वीपीय पठार से अलगाव कैसे हुआ?

उत्तर :

- उत्तर-पूर्वी पठार वास्तव में प्रायद्वीपीय पठार का विस्तारित भाग है।
- हिमालय की उत्पत्ति के समय भारतीय प्लेट के उत्तर-पूर्व की ओर खिसकने से राजमहल पहाड़ियों और मेघालय पठार के बीच भ्रंश घाटी बनी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बाद में नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों ने इस घाटी को भर दिया।
- इसी भूवैज्ञानिक प्रक्रिया के कारण मेघालय और कार्बी एंगलोंग पठार मुख्य प्रायद्वीपीय पठार से अलग हो गए।
- मेघालय पठार को वहाँ निवास करने वाली जनजातियों के आधार पर गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों में बाँटा गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

निबन्धात्मक प्रश्न–

Q.1 भारत की प्रमुख भूआकृतिक इकाइयों का वर्णन कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.1 भारत की प्रमुख भूआकृतिक इकाइयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- भारत की धरातलीय विविधता उसकी भूवैज्ञानिक संरचना, भू-आकृति निर्माण की प्रक्रियाओं तथा विकास की अवस्थाओं का परिणाम है।
- देश के भू-आकृतिक स्वरूप को समझने के लिए इसे प्रमुख स्थलाकृतिक इकाइयों में बाँटा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी पर्वतमालाएँ

- इस इकाई में हिमालय और उत्तर-पूर्वी पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं।
- हिमालय में समानांतर पर्वत श्रेणियाँ, चोटियाँ, सुंदर घाटियाँ और महाखड्ड पाए जाते हैं।
- पर्वतीय क्षेत्रों में बहने वाली तीव्र प्रवाह वाली नदियाँ घाटियों तथा जलप्रपातों जैसी स्थलाकृतियों के विकास में योगदान देती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर भारत का मैदान

- यह विशाल मैदान नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है।
- इसकी मिट्टी उपजाऊ है और यहाँ अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं।
- मैदान की स्थलाकृति में नदी निक्षेपों तथा अपरदन से संबंधित विविध रूप दिखाई देते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

प्रायद्वीपीय पठार

- यह प्राचीन, स्थिर किंतु कटा-फटा भूभाग है।
- इसमें अनेक पठार और अवशिष्ट पर्वत शामिल हैं।
- इसकी नदियों के प्रवाह की दिशाएँ भी धरातलीय ढाल को समझने में सहायक हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

भारतीय मरुस्थल

- इस क्षेत्र में शुष्क परिस्थितियाँ, रेत के टिब्बे और बरखान प्रमुख हैं।
- कम वर्षा तथा अधिक वाष्पीकरण इसके प्राकृतिक वातावरण को प्रभावित करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

तटीय मैदान

- देश के तटीय मैदान पश्चिमी और पूर्वी भागों में विभाजित हैं।
- इनकी चौड़ाई, तट की प्रकृति तथा नदी निक्षेपों के कारण स्थलरूपों में अंतर पाया जाता है।

द्वीप समूह

- भारत के द्वीप समुद्री क्षेत्रों में स्थित हैं।
- उनकी उत्पत्ति तथा भौतिक संरचना में अंतर है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 भारत के द्वीप समूहों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 भारत के द्वीप समूहों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

- भारत में दो प्रमुख द्वीप समूह हैं।
- एक बंगाल की खाड़ी में और दूसरा अरब सागर में स्थित है।
- दोनों समूहों की उत्पत्ति, भौतिक संरचना तथा स्थलाकृतिक विशेषताओं में अंतर पाया जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बंगाल की खाड़ी का द्वीप समूह

- इस समूह में उत्तर में अंडमान और दक्षिण में निकोबार द्वीप शामिल हैं।
- ये समुद्र में जलमग्न पर्वतों का हिस्सा हैं।
- कुछ छोटे द्वीपों की उत्पत्ति ज्वालामुखीय गतिविधियों से भी संबंधित है।
- बैरन द्वीप भारत का एकमात्र जीवंत ज्वालामुखी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- इस समूह की प्रमुख पर्वत चोटियों में सैंडल चोटी, माउंट डियावोलो, माउंट कोयोब और माउंट थुलियर शामिल हैं।
- यहाँ की संरचना में कंकड़, पत्थर तथा गोलाश्म पाए जाते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

अरब सागर का द्वीप समूह

- इसमें लक्षद्वीप और मिनिकॉय सम्मिलित हैं।
- ये द्वीप केरल तट से दूर स्थित हैं और इनकी भौतिक संरचना प्रवाल निक्षेपों से संबंधित है।
- इस समूह में छोटे द्वीपों की उपस्थिति और उनकी समुद्री स्थिति इसे विशिष्ट बनाती है।
- द्वीपों पर प्रवाल निक्षेपों के साथ सुंदर पुलिन भी पाए जाते हैं।
- यहाँ की वनस्पति में भूमध्यरेखीय प्रकार की विशेषताएँ मिलती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 हिमालय तथा उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों की प्रमुख श्रेणियों और उनके विस्तार का वर्णन कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 हिमालय तथा उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों की प्रमुख श्रेणियों और उनके विस्तार का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

- हिमालय तथा उत्तर-पूर्वी पहाड़ियाँ भारत की प्रमुख भूआकृतिक इकाइयों में शामिल हैं।
- इनकी पर्वत श्रेणियों का विस्तार विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग दिशाओं में दिखाई देता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- हिमालय की प्रमुख समानांतर श्रेणियों में बृहत् हिमालय, पार हिमालय, मध्य हिमालय और शिवालिक शामिल हैं।
- ये श्रेणियाँ उत्तर-पश्चिमी भारत में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर फैली हुई हैं।
- दार्जिलिंग तथा सिक्किम क्षेत्र में इनका विस्तार पूर्व-पश्चिम दिशा में दिखाई देता है, जबकि अरुणाचल प्रदेश में इनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर में पहाड़ियाँ उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हैं।
- बृहत् हिमालय को केंद्रीय अक्षीय श्रेणी भी कहा जाता है।
- इसकी पूर्व-पश्चिम लंबाई लगभग 2,500 किलोमीटर है।
- उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

संरचना तथा भूआकृति विज्ञान

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- यह पर्वत श्रेणी भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य तथा पूर्वी एशिया के देशों के बीच एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है।
- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में मेघालय का पठार भी महत्त्वपूर्ण है।
- यहाँ की पहाड़ियों को स्थानीय जनजातियों के नाम के आधार पर गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों में विभाजित किया गया है।
- यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना और खनिज संपदा के लिए जाना जाता है।